

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत

31 मई 2020

वर्ग अष्टम्

राजेश कुमार पाण्डेय

दिव्य वाणी.पाठ 1 संस्कृत भाषा एवं वर्णमाला

भाषा- भाषा वह साधन जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन के भावों और विचारों को स्पष्ट रूप से दूसरों के सामने में प्रकट करता है, वह भाषा कहलाती है।

भाषा शब्द का मूल धातु भाष् है अतः भाषा का शाब्दिक अर्थ यह होता है कि भावों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने वाली व्यवस्थित शब्दावली।

संस्कृत भाषा- विश्व की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत ही है यह भाषाओं की जननी कही जाती है सुरवाणी या देववाणी के नाम से भी जानी जाती है।

लिपि- जिस माध्यम के द्वारा किसी भाषा को लिखित रूप में प्रदान किया जाता है वह उस भाषा की लिपि कहलाती है संस्कृत भाषा की लिपि देवनागरी कही जाती है।

भाषा के रूप- भाषा के दो रूप होते हैं

(क) मौखिक भाषा (ख) लिखित भाषा

व्याकरण- किसी भी भाषा का शुद्ध एवं पूर्ण ज्ञान कराने वाला शास्त्र को ही व्याकरण कहते हैं।

अर्थात् शब्दों को शुद्ध लिखना ,बोलना , शुद्ध पढ़ना , शुद्ध वाक्य बनाना तथा शब्दों के लिंग आदि का ठीक- ठीक ज्ञान प्राप्त करना, बिना व्याकरण के संभव नहीं है ।

व्याकरण के अंग-भाषा का मुख्य अंग है वाक्य।

वाक्य शब्दों से बनता है। तथा शब्द वर्णों से बनते हैं इस प्रकार व्याकरण में भाषा के उन तीनों अंगों का विवेचन किया जाता है।

वर्णमाला- भाषा की वह छोटी से छोटी ईकाई जिसके और टुकड़े नहीं किया जा सकते हैं वर्ण कहलाती है। जैसे – अ,इ,उ,क,ख् आदि।